

विभाग: – क (10)

1) अधोलिखितेषु अनुच्छेदरेको लिख्यताम्

10

तव प्रियः कविः शीतकालः

विभाग: -ख (40)

2) अधः प्रदत्तयोः निबन्धयोः एकस्य अनुवादः संस्कृतभाषायाम् अनुवादः कार्यः 15 x 1 = 15

a) एकदा एकटि कुकुर एकटि मांसखण्डे मुखे लहैया नदीतीरेर पथ धरिया यাইतेहिल। तखन नदीर जले पतित निजेर प्रतिबिम्ब देखिया से मने मने चिन्ता करिल- एहि अपर एकटि कुकुर मांसखण्डे लहैया यাইतेहे। अनन्तर लोभवशतः सेइ मांसखण्डे लहैवार जन्य जले पतित हईल। तारपर यखन से मुखव्यादान करिल, तखन मुखस्थित मांसखण्डे जले पड़िल एवं नदीर श्रोते भासिया गेल। तखन से मने मने चिन्ता करिल- दुराशा सर्वप्रकारे परित्याग करा उचित।

b) कोनओ एक ग्रामे एक ब्राम्हण ओ तार स्त्री एकटि कुटिरे वास करित। ब्राम्हणेर स्त्री हिल बड़ बगड़ाटे। तहार बगड़ाडर भये बाड़ीते काकओ बसित ना। तहार बगड़ाडर ज्वाला सह्य करिते ना पारिया ब्राम्हण एकदिन बाड़ी छाड़िया बने चलिया गेल। बने एक गाहतलाय बसिया ब्राम्हण काँदितेहिल। तखन एक भूत गाह हईते तहाके बलिल- “काँदो ना। आमि तोमार बाड़ीर सामनेर बेल गाहे एकशत बत्सर यावत् वास करितेहिलाम; किन्तु तोमार स्त्रीर चित्कारेर भये सेइ वासस्थान छाड़िया पलाइया आसियाह। आमि तोमार मङ्गल करिवा”

3) जीवनस्य लक्ष्यं वर्णयित्वा पितरमुद्दिश्य पत्रं रचय।

अथवा,

कस्यचित् स्थानस्य भ्रमणवृत्तान्तविषये मित्राय पत्रं रचय।

4) एको वृद्धव्याघ्रः स्नातः कुशहस्तः सरस्तीरे वृते- भो भो पान्थाः इदं सुवर्णकङ्कणं गृह्यताम्। ततो लोभकृष्टेन केनाचित् पान्थेनालोचितम्- भाग्येनैतत् सम्भवति। प्रकाशं ब्रूते- कुत्र तव कङ्कणम्? व्याघ्रं हस्तं प्रसार्य दर्शयति। पान्थोऽवदत्- कथं मारात्मके त्वयि विश्वासः? व्याघ्र उवाच – शृणु रे पान्थ, प्रागेव यौवनदशायामतिदुर्वृत आसम्। अनेकगोमनुषाणां वधान्मे पुत्रा मृताः दाराश्च। वंशहीनश्च।

1) पान्थस्य विश्वासोत्पादनार्थं किमुवाच व्याघ्रः? 3

2) कथं पान्थः लोभकृष्टोऽभवत्? 4

3) कुत्रासीत् वृद्धव्याघ्रः? 3